ये अव्यक्त इशारे - मार्च 2026

"निश्चय के फाउण्डेशन को मजबूत कर सदा निर्भय और निश्चित रहो"

01. जब कोई बड़े के हाथ में हाथ होता है तो छोटे की स्थिति बेफिक्र, निश्चित रहती है। आपको निश्चय है कि हर कर्म में बापदादा मेरे साथ भी है और हमारे इस अलौकिक जीवन का हाथ उनके हाथ में है अर्थात् जीवन उनके हवाले है तो ज़िम्मेवारी उनकी हो जाती है। सभी बोझ बाप के ऊपर रख अपने को हल्का कर दो तो सदा निश्चित रहेंगे और हर कार्य एक्यूरेट होगा।

02. जो निश्चयबुद्धि होगा वह निश्चित होगा, उसे किसी भी प्रकार का चिन्तन वा चिन्ता नहीं होगी। क्या हुआ? क्यों हुआ? ऐसे नहीं होता तो अच्छा होता, यह भी व्यर्थ चिंतन है। निश्चयबुद्धि निश्चित वह कभी व्यर्थ चिन्तन नहीं करेगा। सदा स्वचिन्तन में रहने वाला, स्वस्थिति से परिस्थिति पर विजय प्राप्त कर लेता है।

03. विजयी बनने का फाउन्डेशन है ''निश्चय'', फाउन्डेशन अगर पक्का है तो बिल्डिग हिल नहीं सकती, निश्चित रहते हैं। अगर फाउन्डेशन कच्चा है तो थोड़ा-सा भी तूफान आयेगा, थोड़ी भी धरनी हिलेगी तो भय होगा कि यह बिल्डिग हमारी गिर नहीं जाए या क्रेक (दरार) नहीं हो जाए। लेकिन निश्चय का फाउन्डेशन पक्का होगा तो निर्भय और निश्चित रहेंगे।

04. निश्चय सदा ही निश्चित बनाता है और जो निश्चित स्थिति में रहकर कोई भी कार्य करता है वह उसमें सफल जरूर होता है क्योंकि निश्चित स्थिति में बुद्धि यथार्थ जजमेंट करती है। यथार्थ निर्णय का आधार है - निश्चय बुद्धि, निश्चित स्थिति, उसमें सोचने की भी आवश्यकता नहीं है।

05. श्रीमत प्रमाण हर कदम हो तो सदा निश्चित रहेंगे और निश्चित हैं तो सदा यथार्थ निर्णय देंगे। जब निर्णय यथार्थ होगा तो विजयी होंगे। त्रिकालदर्शी आत्मा सदा ही निश्चित रहती है क्योंकि उसे निश्चय है कि हमारी विजय हुई ही पड़ी है।

06. निश्चय बुद्धि बच्चे सदा हर्षित और निश्चित रहते हैं। चिन्ता खुशी को खत्म करती है और निश्चिन्त हैं तो सदा खुशी रहेगी, जब किसी भी बात में क्यों हुआ, कैसे हुआ, क्या होगा!... यह प्रश्न आते हैं तब चिंता होती है। क्या, क्यों, कैसे - ये चिन्ता की लहर है। कई फिर कहते हैं कि मेरे से ही क्यों होता है? मेरे पीछे ये बंधन क्यों है! मेरे पीछे माया क्यों आती है! मेरा ही हिसाब-किताब कड़ा है, क्यों? तो 'क्यों' आना माना चिन्ता की लहर। जो इन चिन्ताओं से परे है वही निश्चित है।

07. निश्चयबुद्धि का अर्थ है बेफ़िक्र बादशाह, वही बाप समान है। विनाशी धन वाले जितना कमाते उतना समय प्रमाण फिक्र में रहते। लेकिन जिन्हें फेथ है कि हम ईश्वरीय खजानों के मालिक और परमात्म बालक हैं वह सदा ही स्वप्न में भी बेफिक्र बादशाह हैं, क्योंकि उनको विश्वास है कि यह ईश्वरीय खजाने इस जन्म में तो क्या लेकिन अनेक जन्म साथ हैं, साथ रहेंगे इसीलिए वह निश्चयबुद्धि, निश्चित रहते हैं।

08. समस्याओं का काम है आना, निश्चयबुद्धि आत्मा का काम है समाधान स्वरूप से समस्या को परिवर्तन करना। क्यों? आप हर ब्राह्मण आत्मा ने ब्राह्मण जन्म लेते ही माया को चैलेन्ज किया है कि हम मायाजीत बनने वाले हैं। तो समस्या का स्वरूप माया का स्वरूप है। जब चैलेन्ज किया है तो माया सामना तो करेगी लेकिन आप उसे निश्चयबुद्धि विजयी स्वरूप से, नथिंगन्यु समझकर पार कर लो तो बेफिकर बादशाह रहेंगे।

09. आपको जो भी ड्यूटी मिली हुई है, उसमें सदा एक्यूरेट रहो, जो ड्यूटी पर एक्यूरेट रहता है उसको सभी ईमानदार वा फेथफुल की नज़र से देखते हैं। यहाँ भी जो एक्यूरेट सेवा पर रहते हैं वही बाप के फेथफुल हैं। एक होता है बाप में पूरा फेथ, दूसरा है बाप के साथ सेवा में भी फेथफुल। ऐसे फेथफुल निश्चयबुद्धि बच्चे सदा विजयी और निश्चिंत रहते हैं।

10. जैसे ज्ञान की सब्जेक्ट है, वैसे सेवा की भी सब्जेक्ट है, जो इसमें फेथफुल निश्चयबुद्धि है वही नम्बर आगे जा सकता है। सुबह से रात तक अपना फिक्स प्रोग्राम, डेली डायरी बनाओ, क्योंकि जिम्मेवार आत्मायें हो, रिवाजी आत्मायें नहीं, विश्व कल्याणकारी आत्मायें हो। तो जो जितना बड़ा आदमी होता है, उसकी दिनचर्या सेट होती है।

11. फेथफुल की पहली निशानी है - हर सेकण्ड हर कदम श्रीमत पर एक्यूरेट चलना। एक्यूरेट मूर्ति बनना अर्थात् हेमर लगना। हेमर से ही तो उसे ठोक-ठोक करके ठीक करते हैं। आप लोग तो हेमर खाने के अनुभवी हो गये हो, नथिंग न्यु। खेल लगता है ना। देखते रहते हो और मुस्कराते रहते हो, दुआयें देते रहते हो। हीरो एक्टर अर्थात् एक्यूरेट पार्ट बजाने वाले, निश्चयबुद्धि निश्चिंत आत्मा।

12. कैसी भी कड़ी परिस्थिति हो लेकिन खेल समझने से कड़ी समस्या भी हल्की बन जाती है। कई बच्चों में हिम्मत है इसलिए कोई भी बात होती है तो कहते हैं - हां करेंगे, सोचेंगे। हिम्मत तो है, लेकिन फेथ नहीं है। फेथफुल के बोल ऐसे नहीं होते। फेथफुल का अर्थ ही है - मन, वचन, कर्म हर बात में निश्चयबुद्धि, उनके मुख से कभी हिम्मतहीन बनाने वाले शब्द नहीं निकल सकते।

13. सबसे पहले स्वयं में पूरा फेथ (विश्वास) चाहिए फिर बाप-दादा और सर्व परिवार की आत्माओं में फेथफुल होना पड़ता है। जितना फेथफुल बनकर निश्चयबुद्धि होकर कोई कर्तव्य करेंगे तो फेथफुल होने से सक्सेसफुल हो ही जायेंगे। फेथफुल होने से हर कर्तव्य, हर संकल्प, हर बोल पावरफुल होगा।

14. विजयी बनने का फाउन्डेशन है ''निश्चय'', फाउन्डेशन अगर पक्का है तो बिल्डिग हिल नहीं सकती, निश्चिंत रहते हैं। लेकिन सिर्फ बाप में निश्चय नहीं, अपने आपमें भी निश्चय और ड्रामा में भी निश्चय। वाह ड्रामा वाह! अगर ड्रामा में निश्चय होगा तो अकल्याण की बात भी कल्याण में बदल जायेगी।

15. जैसे पहरे वाला चौकीदार अगर शस्त्रधारी होता है और उसको निश्चय है कि मेरा शस्त्र दुश्मन को भगाने वाला है, हार खिलाने वाला है तो वह कितना निर्भय हो करके चलता रहता है। तो आप के पास भी सर्व शक्तियों रूपी शस्त्र सदा साथ हैं, सिर्फ आवाह्न करो अर्थात् मालिक बन आर्डर करो तो सफलता सदा हुई पड़ी है।

16. यदि निश्चय रूपी फाउण्डेशन पक्का है तो सहज योगी, निर्मल स्वभाव, शुभ भावना की वृत्ति और आत्मिक दृष्टि वाले होंगे। चलन और चेहरे से हर समय सरलता की झलक अनुभव होती रहेगी। तो हरेक की विशेषता को स्मृति में रख एक दो में फेथफुल रहो तो उनकी बातों का भाव बदल जायेगा।

17. जैसे आपस में दो मित्र होते हैं तो उनके बीच यदि कोई उनकी ग्लानि करने आता है तो वह उसके भाव को बदल देते हैं। जहाँ निश्चय होता है वहाँ शब्द का भाव बदल साधारण बात हो जाती है। तो हरेक की विशेषता को देखो तब अनेक होते भी एक दिखाई देंगे। एकमत संगठन हो जायेगा। कोई किसके ग्लानि की बातें सुनाये तो उसे टेका देने के बजाए सुनाने वाले का रूप परिवर्तन कर दो।

18. जो जितना निश्चयबुद्धि होगा उतना ही सभी बातों में विजयी होगा। निश्चयबुद्धि की कभी हार नहीं होती। हार होती है तो समझना चाहिए कि निश्चय की कमी है। निश्चयबुद्धि विजयी रत्नों में से हम एक रत्न हैं, ऐसे अपने को समझना है। कोई भी विघ्न आए तो उनको पेपर समझ पास करना है। बात को नहीं देखना है लेकिन पेपर समझ पास होना है।

19. बाप में तो निश्चय है लेकिन अपने में भी निश्चयबुद्धि होकर कार्य करो तो फिर विजय ही विजय है। विजय के आगे समस्या कोई चीज़ नहीं है। फिर वह समस्या नहीं फील होगी लेकिन खेल फील होगा। खेल खुशी से किया जाता है। कोई कार्य सहज होता है तो कहा जाता यह तो बायें हाथ का खेल है अर्थात् सहज है। तो यह भी बुद्धि का खेल हो जायेगा। खेल में घबरायेंगे नहीं।

20. कर्म करने के पहले यह निश्चय रखो कि विजय तो हमारी हुई पड़ी है। अनेक कल्प विजयी बने हैं। जब अनेक कल्प, अनेक बार विजयी बन विजय माला में पिरोने वाले, पूजन होने वाले बने हैं तो अब वही रिपीट करना है। बना हुआ कर्म दुबारा रिपीट करना है इसलिए कहा जाता है कि बना बनाया....। बना हुआ है लेकिन अब फिर से रिपीट कर 'बना बनाया' जो कहावत है उसको पूरा करना है।

21. व्यर्थ संकल्प वा संशय की मार्जिन होते हुए भी समर्थ संकल्प चलें कि सदा बाप रक्षक है, कल्याणकारी है। इस निश्चय की विजय अवश्य होती है। तो क्वेश्चन मार्क का टेढ़ा रास्ता न ले सदा कल्याण की बिन्दी लगाओ। फुलस्टॉप। इसी विधि से हर बात सहज भी होगी और सिद्धि भी प्राप्त होगी।

22. यह निश्चय व स्मृति और समर्थी रखो कि अनेक बार बाप के बने हैं व मायाजीत बने हैं, तो अब बनना क्या मुश्किल है! क्या यह स्मृति स्पष्ट नहीं है कि मुझ श्रेष्ठ आत्मा ने विजयी बनने का पार्ट अनेक बार बजाया है? अगर स्मृति स्पष्ट नहीं है तो इससे सिद्ध है कि बाप के आगे स्वयं को स्पष्ट नहीं किया है।

23. सरकमस्टांस भले कैसे भी हों लेकिन निश्चयबुद्धि बच्चे सरकमस्टांस में अपनी स्वस्थिति की शक्ति से सदा विजयी अनुभव करेंगे। चाहे दुनिया वाले लोग वा ब्राह्मण परिवार के सम्बन्ध-सम्पर्क में दूसरा समझे वा कहे कि यह हार गया – लेकिन वह हार नहीं है, जीत है। कोई भी सेवा की, संगठन की, प्रकृति की परिस्थिति स्वस्थिति को वा श्रेष्ठ स्थिति को डगमग करती है तो यह भी बन्धनमुक्त स्थिति नहीं है। इस बन्धन से भी मुक्त बनो।

24. साकार में अगर कोई निमित्त श्रेष्ठ आत्मा साथ में होती है तो उनसे कोई भी बात वेरीफाय कराए फिर करेंगे तो निश्चयबुद्धि होकर करेंगे। निर्भयता और निश्चय दोनों गुणों को सामने रख करेंगे। तो जहाँ सदा निश्चय और निर्भयता है वहाँ सदैव श्रेष्ठ संकल्प की विजय है। जो भी संकल्प करते हो, अगर सदा निराकार और साकार साथ वा सम्मुख है, तो वेरीफाय कराने के बाद निश्चय और निर्भयता से करो, इससे समय भी वेस्ट नहीं जायेगा।

25. जैसे डाक्टर पेशेन्ट को पहले फेथ में लाते हैं, उन्हें विश्वास हो जाता है कि यह डाक्टर बड़ा अच्छा है, यहाँ से शफा मिल जायेगी। वैसे डाक्टर कितनी भी बढ़िया दवाई दे लेकिन अगर फेथ नहीं है तो उस दवाई का असर नहीं होता। ऐसे रुहानी डाक्टरी में भी ऐसी शक्तिशाली स्टेज हो जो सबका फेथ हो जाए कि यहाँ पहुंचे हैं तो अवश्य कोई न कोई प्राप्ति होगी ही।

26. जैसे कार में बैटरी जब थोड़ा ढीली हो जाती है, कार अपने आप नहीं चलती है तो दूसरों से थोड़ा धक्का लगवाते हैं, ऐसे जिस भी आत्मा में आपका फेथ हो और समझो इनसे हमको मदद मिल सकती है तो उनसे थोड़ा-सा सहयोग लेकर आगे बढ़ जाना चाहिए। कमजोरी की बात को ज्यादा नहीं सोचना तब खुशी में आगे बढ़ते जायेंगे।

27. बाप सर्वशक्तिवान है तो उसका हाथ पकड़ने वाले पहुँचे कि पहुँचे - यह फेथ रखो। चाहे खुद भले कमजोर भी हो लेकिन साथी तो मजबूत है ना! इसलिए पार हो ही जायेंगे। सदा ऐसे निश्चयबुद्धि विजयी रत्न हैं, इसी स्मृति में रहो। बीती सो बीती, बिन्दी लगाकर आगे बढ़ो।

28. बाप का बच्चों में पूरा फेथ है कि यही मेरे बच्चे विघ्न-विनाशक आत्मायें हैं, पूज्य आत्मायें हैं, यह बच्चे बाप से भी आगे हैं। निमित्त बने हुए सदा बाप को भी निश्चिन्त करने वाले हैं, सदा खुशखबरी सुनाने वाले हर एक विशेष हैं। स्वयं में भी ऐसा फेथ रख इसी स्मृति स्वरूप में रहो तो विजयी बन जायेंगे।

29. आपस में एक दो के प्रति सच्चा स्नेह हो, तो स्नेही आत्मा के प्रति कभी अनुमान पैदा नहीं होगा। उनके स्नेह के बोल, साधारण होते भी फील नहीं होंगे। उनका हल्का बोल भी ऐसे लगेगा कि इसने अवश्य कोई मतलब से कहा होगा। बेमतलब, व्यर्थ नहीं लगेगा। जहाँ स्नेह होता है, वहाँ फेथ जरूर होता है। तो ब्राह्मण परिवार में एक दो के प्रति इतना स्नेह वा फेथ रख सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि बनो तब ब्रह्मा बाप की आशाओं को पूरा कर सकेंगे।

30. कई बच्चे समझते हैं मैं स्वयं को जानता हूँ कि मैं ठीक हूँ, दूसरे नहीं जानते व दूसरे नहीं पहचानते, आखिर पहचान ही लेंगे व आगे चलकर देखना क्या होता है! यह भी ज्ञान स्वरुप, याद स्वरूप आत्मा के लिए स्वयं को धोखा देने वाली अलबेलेपन की मीठी निद्रा है। जिनके निश्चय का फाउन्डेशन मजबूत है वह कभी छिप नहीं सकते, वे सदा निर्भय और निश्चिंत रहते हैं।

31. जिस समय कोई भी परिस्थिति आये तो बाप को साथी बना लो तो अनुभव करेंगे कि मैं अकेला नहीं हूँ, मेरे साथ विशेष शक्ति है। जहाँ बाप है वहाँ चाहे कितने भी तूफान हों, वह तोहफा बन जायेंगे। निश्चय बुद्धि विजयन्ति - इस टाइटिल की स्मृति से विजयी बनो और विजयी वर्ष मनाओ।

* * * * * ओम्शान्ति * * * * *